शूद्र और उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर इस्लाम का प्रभावः एक अध्ययन

डा0 श्वेता गुप्ता

निम्न जातीय हिन्दू वर्ग जो इस्लाम स्वीकार कर रहे थे, उसका मूल कारण भारतीय वर्ण–व्यवस्था की संर्कीणता या अस्पृश्यता की भावना ही नहीं, वरन् मुस्लिम समाज में प्राप्त नये व्यवसाय और अवसर भी थे। इस प्रकार के मत–परिवर्तन मुख्यतः नगरीय क्षेत्रों में हुए, क्योंकि विजेता मुख्यतः नगरों में ही रहते थे और उनका आंतक भी प्रधानतः वही था। स्पष्टतः यह कहा जा सकता है कि उच्च शूद्रों की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन हो रहा था किन्तु उन्हीं शूद्रों का एक वर्ग जातीय बंधनों से मुक्त होने हेतु इस्लाम की ओर आर्कषित हो रहा था। जिसमें उन्हें सफलता भी मिल रही थी। यह देखकर वर्णाश्रम धर्म के संरक्षक विचलित भी हुए और उन धर्म परिवर्तित हिन्दुओं को वापस अपने धर्म में लाने के लिए कई विधान तक करने लगे।